“चिरांद”

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

M.A. Semester-II

Paper/CC – (8) Concept and Technique of Archaeology,Pre and Proto History of Africa & Archaeology Sites

चिरांद पुरास्थल बिहार प्रान्त के सारन जिले में स्थित है| यह पुरास्थल गंगा और सरयू नदी के संगम पर छपरा जिले से 11 कि०मी० दक्षिण- पूर्व दिशा में स्थित है| यहाँ से नवपाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष मिले है| इस संस्कृति के समान अवशेष सोनपुर, उरियप, चेचर-कुतुबपुर, मनेर, तारडीह अन्य स्थलों के उत्खनन से प्राप्त हुए है| इस पुरास्थल का उत्खनन 1962-63 ई० में बिहार पुरातत्व विभाग और पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के तत्वाधान में हुआ| 1969-70 ई० में यहाँ पुनः उत्खनन कराया गया| चिरांद के उत्खनन के फलस्वरूप यहाँ पांच सांस्कृतिक काल निर्धारित किए गए|

<u>काल-I, नवाश्म</u>:- चिरांद की आदि संस्कृति नवाश्म थी| प्राकृतिक भूमि के ऊपर इस काल के स्तरों का 3.5 मीटर संचय मिलता है| इस काल में धूसर मृदभांड, लोहित मृदभांड तथा कृष्ण मृदभांड का प्रयोग होता था| हड्डियों के बने उपकरणों की प्रचुरता चिरांद की नवाश्म संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता थी| उत्खनन में मृग श्रृंग निर्मित अनेक उपकरण मिले जो चिरांद पुरास्थल की प्रमुख विशेषता है| अन्य उपकरण में तेजक, छेनी, हथौड़े, कटार, कंगन तथा पशुओं की सामान्य अस्थियों के बने पार्श्व, स्क्रेपर, अंत स्क्रेपर, सुई, पिन, दन्त-खोदनी, बरमें, बणाग्र इत्यादि उपलब्ध हुए है|

<u>काल-II अ</u>:- काल । के तत्काल पश्चात् काल-॥ अ संस्कृति का आविर्भाव हुआ| यह कृष्ण लोहित मृदभांड सह क्षुद्राश्म संस्कृति थी| यहाँ का मृदभांड उधोग क्षुद्राश्म संस्कृति की विशेषताओ से सम्पन्न थी| इनमे लोहित तथा कृष्ण-लोहित दीर्घ चोचदर कटोरा प्रमुख प्रकार है|कृष्ण मृदभांड में संकरे गर्दन का एक लम्बा सा सुंदर जामपान तथा अन्य पात्र प्रकार मिलें है|

<u>काल-II ब</u>:- इस काल की प्रमुख विशेषता लोहे का प्रयोग है| लौह वस्तुओ में बड़े ब्लेड का एक टुकड़ा मिला| इस काल कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि अवशेष शवाधान है| शवाधान से टूटे-फूटे कृष्ण-लोहित मृदभांड, हड्डी के टुकड़े और किसी बड़े जानवर की खोपड़ी मिली| अन्य वस्तुओ में पकी मिट्टी की उत्कीर्ण आकृतियाँ, मनके, पशु-पक्षियों तथा मछली की हड्डियों का उल्लेख किया जा सकता है|

काल-III:- इस काल में कृष्ण लोहित के साथ-साथ उत्तरी कृष्ण-मार्जित मृदभांड का प्रयोग होने लगा| इस काल के पुरावशेषो में एक नवाश्म परशु, तांबे की अंजन शलाका लोहे के ब्लेड, पत्थर के कर्णभूषण, पत्थर के मनके, छोटी-छोटी गोलियाँ, पक्की मिट्टी के खिलौने गाड़ी, हड्डी के पिन आदि उल्लेखनीय है|

काल IV:- इस काल की अवधि प्रथम शताब्दी ई०पूर्व से तीसरी शताब्दी ई० सन निर्धारित की गई| इस काल के निर्माणकालो के पक्की ईटे मिली| 88 कुषाण सिक्को का एक ढेर मिला| इससे बिहार में कुषाण शासन का पता चलता है|

काल V:- यह चिरांद का अंतिम काल है| इस काल के स्तर से कलचुरी सम्राट गांगेयदेव के पांच मिलावटी स्वर्ण के सिक्के मिलें| इससे कलचुरी साम्राज्य का उत्तर बिहार तक विस्तार होने का साक्ष्य प्रस्तुत होता है| ये सिक्के एक छोटे से पात्र में मिलें जिसमे दो सोने के तार की अंगूठियाँ, चार मिलावटी चाँदी की मुद्रिकाएँ, कांसे की तीन भारी चूड़ियाँ और एक छोटा सा चाँदी का टुकड़ा मिला| शतरंज के सेट का मिलना बड़ा रोचक है| इससे पता चलता है की चिरांद की जनता को भी शतरंज का शौक था|

आवास:- चिरांद में लम्बवत उत्खनन होने से मकानों तथा आवासों के विषय में विस्तृत जानकारी नहीं प्राप्त होती| लेकिन प्राप्त अवशेषों के आधार पर कहा जा सकता है कि मकान एक दुसरे के समीप, आकर गोल तथा 2 मीटर व्यास के

बनायें जाते थे| बांस का आधार बनाकर दीवारे बनाई जाती थी, जिन्हें अंदर तथा बाहर से गीली मिट्टी से ढँक दिया जाता था, फर्श को लीप कर चिकना किया जाता था, गड्ढ़ों में मकान बनाये जाने का प्रमाण मिला हैं| इनके ऊपर नुकीली छत बनाई जाती थी, जो नरकुल तथा घास-फूस की सहायता से निर्मित होती थी| इस प्रकार के घर तथा झोपड़ियाँ आज भी यहाँ देखी जा सकती है| यहाँ के उत्खनन से अनेक चूल्हे मिले है|

<u>मृदभांड</u>:- यहाँ के उत्खनन से मुख्य रूप से चार प्रकार के मृदभांड के प्रयोग का पता चलता है जो है-लाल मृदभांड, धूसर मृदभांड, काले मृदभांड तथा काले-लाल मृदभांड| इन मृदभांडो का निर्माण अधिकांश हाथ से अथवा सीमित मात्रा में धीमी गति से घुमती चाक पर बनाया गया है| इनकी सतह चिकनी व चमकदार है| कुछ पत्रों को गेरुवें रंग से अलंकृत किया गया है| ज्यामितीय आकृतियों, तिरछी, अर्धवृत आदि रेखाओ से चित्रण किया गया है| चौड़े तथा संकरें मुँह वाले बर्तन, साधारण कटोरे, टोटीदार कटोरे एवं लम्बी तथा छोटी टोंटी वाले बर्तन आदि मुख्य पात्र प्रकार है|

<u>उपकरण</u>:- यहाँ के निवासियों द्वारा प्रस्तर उपकरण का प्रयोग कम किया जाता था| लघु पाषाण उपकरणों में ब्लेड, खुरुचनी, चांद्रिक, बाण, कुदाल, सुईयां आदि उल्लेखनीय उपकरण है|